काबुलीवाला

(कहानी)

9

मेरी पाँच वर्ष की बच्ची पायल एक *क्षण* भी चुप नहीं रह सकती। उसके इस स्वभाव से उसकी माँ परेशान हो जाती है, परंतु मेरे साथ ऐसा नहीं है। यदि पायल बहुत देर चुप रहे तो बड़ा अस्वाभाविक सा लगता है।

उस दिन मैं अपने नए उपन्यास का सत्रहवाँ अध्याय लिख रहा था। पायल चुपके से आई और मेरे हाथ पर हाथ रखकर कहने लगी, "पिता जी! राम दयाल चौकीदार है न! वह काक को कउवा कहता है। वह कुछ नहीं जानता। नहीं जानता न!"

मैं कुछ बोलता, इससे पहले वह कहने लगी, "पिताजी, भोला कहता है बादलों में हाथी बैठा है और अपनी सूंड से पानी बरसाता है। क्या यह सच है?"

मैं कुछ उत्तर सोच ही रहा था कि वह फिर पूछने लगी, "पिता जी! माता जी आपकी क्या लगती हैं?"

गंभीर भाव से मैंने कहा, 'पायल देखो, मैं काम कर रहा हूँ। तुम बाहर जाओ और भोला के साथ खेलो।" परंतु पायल बाहर नहीं गई। वह मेरे पैरों के पास बैठकर खेलने लगी।

मेरा कमरा ऊपर था। कमरे की खिड़की से सड़क दिखाई देती है। अचानक पायल अपना खेल छोड़कर खिड़की की ओर दौड़ी और चिल्लाने लगी, "काबुलीवाला! काबुलीवाला!"

"ओहो! अब काबुलीवाला आएगा और मेरा सत्रहवाँ अध्याय कभी पूरा नहीं होगा।" मैंने सोचा। काबुलीवाले ने पायल को देखा। वह डरकर माँ के पास भाग गई।

तभी काबुलीवाला भीतर आ गया। मुझे लिखना छोड़ना पड़ा। मैंने काबुलीवाले से कुछ खरीदा और इधर-उधर की बातें करने लगा। काबुलीवाले ने पूछा, "साहब, वह बच्ची कहाँ है?"

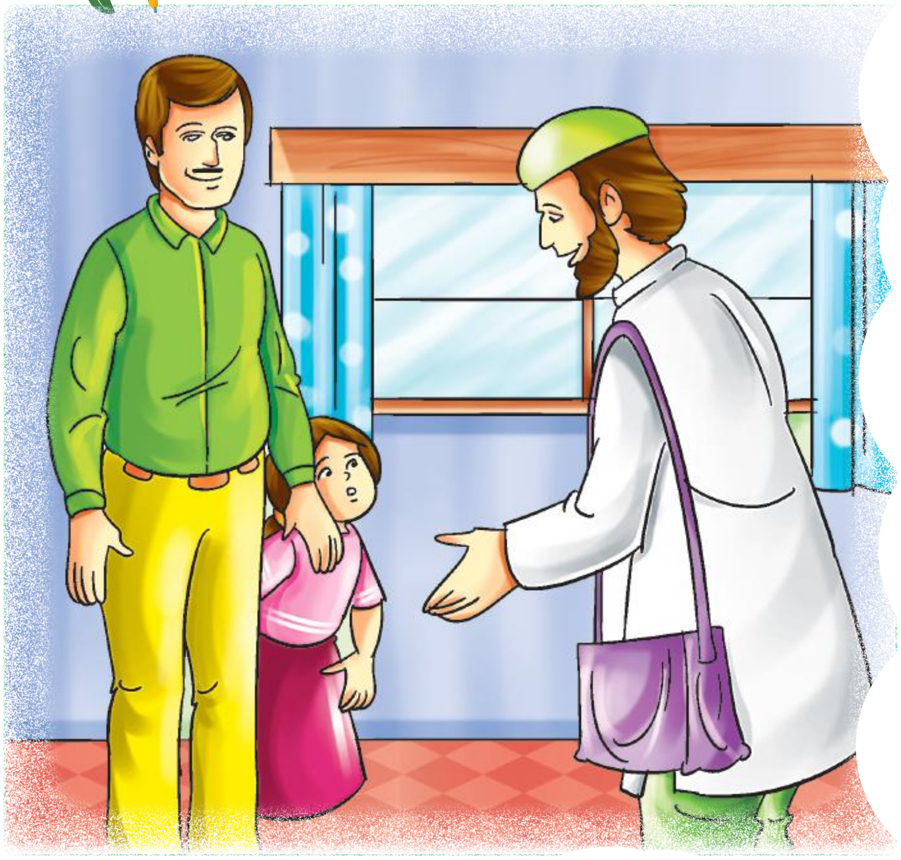

पायल के मन से भय दूर हो जाए, इसलिए मैंने उसको कमरे में बुलाया।

काबुलीवाला उसे किशमिश और बादाम देने लगा। परंतु वह डरकर मुझसे लिपट गई। उसका भय और बढ़ गया।

काबुलीवाले से मिलने का उसका यह पहला *अवसर* था।

कुछ दिनों पश्चात् मैं किसी कार्यवश घर से बाहर निकला तो यह देखकर चकित रह गया कि पायल काबुलीवाले से खूब घुल-मिलकर हँस-बोल रही है। बाद में मुझे पला चला कि काबुलीवाला और पायल की यह दूसरी भेंट नहीं है, अपितु उनकी मित्रता बहुत गहरी हो चुकी है। उनके बीच विचित्र मजाक होते हैं। पायल उससे खिल-खिलाकर पूछती, "काबुलीवाले, काबुलीवाले! तुम्हारे थैले में क्या है?"

"हाथी"

फिर दोनों खूब हँसते।

काबुलीवला आता रहा और दोनों की मित्रता *प्रगाढ़* होती रही।

सर्दियों के अंतिम दिन थे। मैं प्रातः अपने कमरे में बैठा लिख-पढ़ रहा था। वायु में ठिठुरन थी। खिड़की से आती सूर्य की किरणें मेरे चरणों में फैलने लगी थीं। आठ बज चुके थे। मैंने सड़क पर *कोलाहल* होते सुना। बाहर झाँककर

देखा, दो पुलिस के सिपाही काबुलीवाले को पकड़कर ले जा रहे थे। पीछे-पीछे जिज्ञासु बालकों की टोली चल रही थी। एक सिपाही हाथ में चाकू पकड़े हुए था। ''क्या बात है?'' मैंने एक सिपाही से पूछा।

उसने बताया कि काबुलीवाले ने किसी पड़ोसी को एक शॉल बेचा था, परंतु अब वह पैसे देने के समय झूठ बोलता है कि मैंने नहीं खरीदा। काबुलीवाले को उसके झूठ पर क्रोध आया। झगड़ा हुआ और काबुलीवाले ने उसे चाकू मार दिया।

अचानक पायल भी बरामदे में आई और सदा की भाँति चहककर पुकारने लगी,

''काबुलीवाले! काबुलीवाले!''

काबुलीवाले का चेहरा खिल उठा, परंतु उसने हथकड़ी से जकड़े अपने हाथों को ऊपर उठाकर दिखाया और कहा, ''अफसोस! मेरे हाथ बँधे हैं।''

सिपाही काबुलीवाले को लेकर चले गए। प्रहार करने के *आरोप* में उसे कई वर्ष के *कारावास* का दंड मिला।

समय बीतता गया और काबुलीवाले की याद *स्मृति-पटल* पर भी शेष न रही। मेरी बेटी पायल भी अपने पुराने मित्र को भूल गई। उसके जीवन में नए-नए मित्र आ गए थे। ज्यों-ज्यों वह बड़ी होती गई, प्रायः लड़कियों के साथ ही उठती-बैठती। यहाँ तक कि मेरी बातचीत भी उससे कभी-कभी ही हो पाती थी।

कई वर्ष बीत गए। पतझड़ का मौसम था। हम पायल की शादी का प्रबंध कर चुके थे। वह शादी का दिन था। घर में प्रातःकाल से ही शोरगुल और चहल-पहल मची थी। यह करो, वह करो, शीघ्र काम निबटाने और उतावलेपन का जैसे अंत न था। मैं कमरे में बैठा हिसाब देख रहा था। एक व्यक्ति आया और आदर से सलाम कर सामने बैठ गया। यह रहमान था, काबुलीवाला।

प्रथम दृष्टि में तो मैं उसे पहचान नहीं सका। न उसके पास थैला था, न उसके लंबे बाल थे और न वह पहले जैसा हट्टा-कट्टा था। जब वह मुस्कुराया, तब मैं उसे पहचान गया।

''कब आए,'' मैंने पूछा।

''कल शाम को ही जेल से छूटा हूँ।'' वह बोला।

उसके आने के बाद मैं सोचने लगा, यदि यह आज न आया होता, तो अच्छा था। एक क्षण रुककर मैंने कहा,

"शादी का काम चल रहा है। मैं *व्यस्त* हूँ। क्या तुम दूसरे दिन आ सकते हो?"

वह जाने के लिए एकदम मुड़ा, किंतु पलटकर बोला, "साहब, क्या मैं एक क्षण के लिए उस छोटी बच्ची से नहीं मिल सकता?"

कदाचित् उसे विश्वास था कि पायल अब भी वैसी ही छोटी होगी और काबुलीवाला! काबुलीवाला! चिल्लाती हुई आएगी।

मैंने कहा, "घर में शादी है, आज तुम किसी से नहीं मिल सकते।" उसका चेहरा बुझ गया। वह चुपचाप जाने लगा। मुझे कुछ खेद हुआ। इससे पहले मैं उसे वापस बुलाता, वह स्वयं ही लौटा और बोला, "मैं ये कुछ चीजें उस बच्ची के लिए लाया था, आप उसे दे देंगे?"

मैं उसे चीजों के बदले में पैसे देने लगा। उसने मेरा हाथ पकड़ लिया और बोला, "साहब, आप बहुत दयालु हैं। मुझे भूलिएगा नहीं। मुझे पैसे क्यों देते हैं? आपकी बच्ची जैसी मेरे घर में भी एक छोटी लड़की है। मैं उसी का ख्याल कर आपकी लड़की के लिए चीजें लाता हूँ। बेचकर पैसा कमाने के लिए नहीं।" यह कहते हुए उसने अपने ढीले-ढाले कुरते से कागज का एक छोटा मैला-सा टुकड़ा निकाला। बड़ी सावधानी से खोला और दोनों हाथों से सीधा कर मेरी मेज पर फैला दिया।

कोई फोटो नहीं, कोई चित्र नहीं, अपितु एक नन्हें से हाथ की छाप उस कागज पर थी। वह जब भी कोलकाता की गलियों में माल बेचने आता, उसे सदैव हृदय से लगाए रखता।

काबुलीवाले की बेटी के हाथ की छाप से मुझे अपने वर्षों पूर्व की पायल की सुधि हो आई। मैंने तुरंत उसे बुलाया। उसे आने में कुछ अड़चन थी। परंतु मैं नहीं माना। शादी की लाल रेशमी साड़ी पहने, माथे पर चंदन का तिलक लगाए वधु के रूप में सजी-धजी पायल आई और बड़ी शालीनता से मेरे सामने खड़ी हो गई।

उस अलौकिक छवि को देखकर काबुलीवाला *स्तंभित* रह गया। वह अपनी पुरानी मित्र को पहचान न सका। अंत में वह मुस्कुराया और बोला, "मेरी बच्ची! ससुराल जा रही हो?"

पायल लजा गई और सिर झुकाए खड़ी रही। मुझे याद आया वह दिन, जब काबुलीवाला और पायल पहली बार मिले थे। मैं *विषाद* से भर उठा। जब वह चली गई तो रहमान ने *दीर्घ* श्वास छोड़ा और फर्श पर बैठ गया। अचानक उसे ध्यान आया कि उसकी लड़की भी बड़ी हो चुकी होगी।

शहनाई बज रही थी। कोलकाता की गली में बैठे रहमान की आँखों में अफगानिस्तान का बंजर पहाड़ घूम रहा था।

मैंने एक नोट निकाला और उसे देते हुए कहा, "रहमान जाओ, अपनी बेटी के पास जाओ।"

—रवीन्द्रनाथ टैगोर

शब्द-अर्थ

क्षण — पल, घड़ी *(moment)*, अवसर — मौका *(opportunity)*, प्रगाढ़ — घना *(great)*, कोलाहल — शोरगुल *(noise)*, आरोप — दोष *(guilt)*, कारावास — जेल *(prison)*, दीर्घ — लंबा *(long)*, स्मृति — याद *(memory)*, पटल — पट, तख्ता *(screen)*, व्यस्त — तल्लीन *(busy)*, कदाचित् — शायद *(perhaps)*, स्तंभित — चकित *(surprise)*, विषाद — दु:ख *(sorrow)*।

अभ्यास

मौखिक

1. इन शब्दों को पढ़कर सुनाइए—

क्षण	सत्रहवाँ	किशमिश	कार्यवश	जिज्ञासु
स्तंभित	झाँककर	आरोप	विषाद	शहनाई

2. निम्नलिखित प्रश्नों के मौखिक उत्तर दीजिए—

(क) छोटी बच्ची का क्या नाम था?

(ख) काबुली वाले को पुलिस क्यों पकड़ कर ले गई?

(ग) काबुलीवाला कहाँ का रहने वाला था?

(घ) लेखक ने काबुलीवाले को पैसे देकर कहाँ जाने के लिए कहा?

लिखित

1. सही उत्तर पर (✓) का निशान लगाइए—

(क) यह कहानी किसने लिखी है?

☐ काबुलीवाले ने ☐ रवीन्द्रनाथ टैगोर ने ☐ पायल ने

(ख) लेखक उपन्यास का कौन-सा अध्याय लिख रहा था?

- ☐ 25वाँ ☐ 16वाँ ☐ 17वाँ

(ग) काबुलीवाले के थैले में क्या भरा होता था?

- ☐ किशमिश और बादाम ☐ गुब्बारे और खिलौने ☐ बर्फी और मिठाई

(घ) काबुलीवाले ने अपने कुरते से पायल के पिताजी को क्या दिखाया?

- ☐ किशमिश और बादाम ☐ कुछ पैसे ☐ कागज का टुकड़ा

2. वाक्यों को पूरा कीजिए—

(क) यदि पायल बहुत देर तक चुप रहे तो बड़ा .... लगता है।

(ख) वह डरकर .... के पास भाग गई।

(ग) उनके बीच .... मजाक होते थे।

(घ) मेरी बेटी पायल भी अपने .... को भूल गई।

(ङ) मैं .... से भर उठा।

3. सही वाक्यों के सामने (✓) तथा गलत वाक्यों के सामने (✗) का निशान लगाइए—

(क) पायल एक क्षण भी चुप नहीं रह सकती थी। ☐

(ख) दोनों की मित्रता टूट गई। ☐

(ग) मैं उसे चीजों के बदले में पैसे देने लगा। ☐

(घ) पायल बिना लज्जा दुल्हन बनी खड़ी रही। ☐

4. निम्न शब्दों का उनके अर्थ से मिलान कीजिए—

शब्द	अर्थ
(क) सेब	(i) सूखे मेवे
(ख) काजू	(ii) फूल
(ग) हाथी	(iii) मिठाई
(घ) रसगुल्ला	(iv) फल
(ङ) चमेली	(v) जानवर

5. निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर दीजिए—

(क) काबुलीवाले से पायल की मित्रता कैसे हुई?

(ख) काबुलीवाला पायल के पिता से मेवे के दाम क्यों नहीं लेता था?

(ग) काबुलीवाला अपनी बेटी के हाथों की छापवाला कागज अपने पास क्यों रखता था?

(घ) पायल के विवाह के दिन काबुलीवाला क्यों उदास हो रहा था?

भाषा-ज्ञान

1. कठिन शब्दों का दो-दो बार लिखकर अभ्यास कीजिए–

(क) अस्वाभाविक ....

(ख) क्रोध ....

(ग) प्राणघातक ....

(घ) दृष्टि ....

(ङ) अलौकिक ....

2. किसी नाम या संज्ञा के स्थान पर प्रयोग किए जाने वाले शब्द को सर्वनाम कहते हैं। जैसे– वह, तुम, इत्यादि।

- पाठ से पाँच सर्वनाम शब्द चुनकर लिखिए–

(क) ....

(ख) ....

(ग) ....

(घ) ....

(ङ) ....

जिस शब्द से किसी काम का होना प्रकट हो, उसे **क्रिया** कहते हैं।

जैसे– पढ़ता है, खाता है, भागता है, आदि।

3. काबुलीवाला कैसा व्यक्ति था, उसके विषय में पाँच वाक्य लिखिए–

(क) ....

(ख) ....

(ग) ....

(घ) ....

(ङ) ....

क्रियात्मक गतिविधि

- क्या आप अपने माता-पिता से स्नेह करते हैं? यदि हाँ, तो उनके बारे में कुछ पंक्तियाँ लिखिए।